काव्य लक्षण

तददोषौ शब्दार्थौ सगुणावनलंकृति पुनः क्वापि । (काव्यप्रकाश सूत्र 1)

(अनुवाद- दोषों से रहित, गुण-युक्त और कहीं अलंकार रहित भी शब्द और अर्थ काव्य कहलाता है ।)

काव्यप्रकाश- आचार्य मम्मट ।

तत्+अदोषौ(दोषरहित)

शब्दार्थौ(शब्द और अर्थ)

सगुणौ(गुणों से युक्त)

अनलंकृति पुनः क्वापि ।(कहीं कहीं अलंकार के बिना भी)

क्वापि- क्वापीत्यनेनैतदाह यत् सर्वत्र सालंकारौ**(सब जगह अलंकार युक्त)** क्वचित्तु**(कहीं-कहीं)** स्फुटालंकारविरहेऽपि**(स्पष्ट अलंकार न होने पर भी)** न काव्यत्वाहानिः**(काव्यत्त्व की हानि नही होती है)** ।

अर्थात्- आचार्य मम्मट के अनुसार दोषों से रहित, गुण-युक्त तथा अलंकार युक्त शब्दार्थ काव्य कहलाता है । परन्तु कहीं-कहीं स्फुट अलंकार के बिना भी काव्य हो सकता है । इस लक्षण में 'शब्दार्थ' को काव्य कहा है । 'अदोषौ', 'सगुणौ' तथा 'अनलंकृति पुनः क्वापि' ये तीन शब्दार्थ के विशेषण हैं ।